# 22

# बारहों को सिखाना

## ( 10:24-42 )

फिर यीशु ने उस सताव से भय न खाने के कारण बताते हुए जिसकी उसने अभी-अभी भविष्यवाणी की थी, अपने प्रेरितों को निर्देश दिया। यीशु के निर्देश का मुख्य भाग चाहे प्रेरितों के लिए था, पर 10:24 में इसमें एक बदलाव दिखाई देता है। इसके बाद से यीशु मध्यम पुरुष (''तुम'') के अलावा अनिश्चित अन्य पुरुष (जैसे ''चेला,'' ''कोई,'' और ''जो'') का इस्तेमाल करने लगा। इस व्याकरणीय बदलाव का अर्थ यही होगा कि बाद में होने वाली अधिकतर बातें उसके हर चेले के लिए थीं।

### ''चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं'' (10:24, 25)

**[24]''चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं; और न दास अपने स्वामी से। [25]चेले का गुरु के, और दास का स्वामी के बराबर होना ही बहुत है। जब उन्होंने घर के स्वामी को शैतान कहा तो उसके घरवालों को क्यों कुछ न कहेंगे!''**

**आयत 24.** प्रेरितों को उन विरोधों के प्रति चौकस करने के बाद, जिनका उन्हें सामना करना था, यीशु ने उन्हें बताया कि वे इससे चकित न हों, विशेषकर उस व्यवहार को ध्यान में रखते हुए, जो उसके साथ भी किया गया था। सहजबुद्धि इस सच्चाई के साथ सहमत है कि **चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं; और न दास अपने स्वामी से**। चेला अपने गुरु का अनुकरण करता और उससे सीखता है। लूका ने इस कहावत की पहली पंक्ति एक अलग संदर्भ में लिखी और फिर जोड़ा कि ''चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं, परन्तु जो [चेला] सिद्ध होगा, वह अपने गुरु के समान होगा'' (लूका 6:40)। यीशु ने ज़ोर देकर कहा कि केवल वही गुरु है (23:8)। उसने दुख उठाया था, जिस कारण उसके चेलों को भी वैसे ही दुख उठाने की उम्मीद करनी चाहिए (देखें 1 पतरस 2:21; 4:1)।

बाद में, यूहन्ना 13:16 में यीशु ने उनसे कहा, ''दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं, और न भेजा हुआ अपने भेजने वाले से।'' उस वचन में ''भेजा हुआ'' का अनुवाद ''प्रेरित'' भी हो सकता है। यूहन्ना 15:20 में यीशु ने दास की इसी बात को दोहराया और फिर जोड़ा, ''यदि उन्होंने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएंगे; यदि उन्होंने मेरी बात मानी, तो तुम्हारी भी मानेंगे।'' इससे मिलती-जुलती बात रब्बियों की परम्परा में मिलती है: ''दास के लिए इतना ही काफ़ी है कि वह अपने स्वामी के जैसा बन जाए।''[1]

**आयत 25. चेले का गुरु के, और दास का स्वामी के बराबर होना ही बहुत है,** जब दोनों का उनके साथ के कारण दूसरे लोगों के द्वारा एक ही तरह से व्यवहार किया जाए। मसीह

और उसके चेलों के सताव में ऐसा ही था, क्योंकि उन सब के साथ एक ही तरह से व्यवहार किया जाता था।

यीशु ने अपने आपको **घर का स्वामी** और अपने अनुयायियों को **उसके घर वाले** बताया। यह भाषा स्वामी और उसके दासों के पिछले रूपक के जैसी है। स्वामी ''घर का मालिक'' होता था और उसके दासों को ''उसके घर के लोग'' कहा जाता था। यहां उसने **क्यों कुछ न कहेंगे** के तर्क को यह ज़ोर देने के लिए इस्तेमाल किया कि उसके चेलों के साथ उससे भी बुरा व्यवहार किया जाना था, जो उसके साथ हुआ था। उसके आलोचकों ने उसे **शैतान** अर्थात ''दुष्टात्माओं का हाकिम'' कहते हुए बदनाम किया है। मसीह के सम्बन्ध में इस शब्द का इस्तेमाल उसके लिए उनकी नफ़रत और पूरी तरह से आदर की कमी को दिखाता था। यदि उन्होंने मालिक को इस नाम से, अर्थात इस प्रकार शैतान के साथ जोड़ते हुए पुकारा (मरकुस 3:22, 23) तो वे उसके अनुयायियों के साथ क्या करेंगे? डग्लस आर. ए. हेयर ने टिप्पणी की है, ''बालज़बूल का हवाला इस आयत को 9:34 से और यीशु के सामर्थ के कामों पर नकारात्मक प्रतिक्रिया के इसके कथन से जोड़ता है और यह 12:22-32 की ओर देखता है, जहां इस विषय पर और प्रकाश डाला गया है।''[2]

शैतान के लिए ''बालज़बूल'' नाम के सही-सही अर्थ पर विवाद है।[3] कइयों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि इस शब्द का अर्थ ''(स्वर्गीय) निवास का प्रभु/स्वामी'' है। यदि यह सच है तो यीशु का ''घर का स्वामी'' (*oikodespotēs*) शब्दों का खेल है। अन्यों का कहना है कि इस नाम का अर्थ ''गंदगी का स्वामी'' है। इससे मिलते-जुलते नाम ''बालजबूब'' का अर्थ है ''मक्खियों का स्वामी'' मूल में यह एक प्राचीन कनानी देवता का नाम था (2 राजाओं 1:2, 3, 6, 16)। इन नामों का अर्थ चाहे जो भी हो, यहूदी अगुओं के अपमान का ज़ोर यह था कि उन्होंने यीशु को *शैतान* कह दिया।

## ''मत डरना'' (10:26-31)

**[26]''इसलिए मनुष्य से मत डरना; क्योंकि कुछ ढंका नहीं जो खोला न जाएगा, और न कुछ छिपा है, जो जाना न जाएगा। [27]जो मैं तुम से अन्धियारे में कहता हूं, उसे तुम उजियाले में कहो; और जो कानों कान सुनते हो, उसे छतों पर से प्रचार करो। [28]जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है। [29]क्या पैसे में दो गौरैयें नहीं बिकतीं? तौभी तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उन में से एक भी भूमि पर नहीं गिर सकती। [30]तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं। [31]इसलिए, डरो नहीं, तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो।''**

यीशु ने प्रेरितों को तसल्ली देने वाले कारण दे दिए कि वे उनसे क्यों न डरें, जिन्होंने उन्हें सताना था। ''मत डरना'' की आज्ञा इन आयतों में तीन बार मिलती है (10:26, 28, 31)।

**आयतें 26, 27.** यीशु ने प्रेरितों को **न डरने** को कहा, क्योंकि उनके सताव में से कुछ अच्छा निकलने वाला था (देखें प्रेरितों 8:1-4; फिलिप्पियों 1:12-14, 19, 20)। उन्हें राज्य के संदेश का प्रचार करने का काम करने को दिया गया था। उन्हें चाहे कैसे भी सताव का सामना

करना पड़ता, उन्हें इस मिशन को पूरा करना आवश्यक था। जो पहले **ढंका** या **छिपा** हुआ था उसने **जाना** जाना था (देखें मरकुस 4:22; लूका 8:17; 12:2, 3)।

जो कुछ यीशु ने उन्हें गुप्त में बताया था, उन्होंने उसे शीघ्र ही खुलेआम बता पाना था: ''**जो मैं तुम से अन्धियारे में कहता हूं, उसे तुम उजियाले में कहो; और जो कानों कान सुनते हो, उसे छतों पर से प्रचार करो**।'' अपने पुनरुत्थान और ऊपर उठाए जाने के बाद यीशु ने उन्हें ये बातें याद दिलानी थीं अर्थात सारी सच्चाई में उनकी अगुआई के लिए पवित्र आत्मा को भेजना था (यूहन्ना 14:26; 16:13, 14; प्रेरितों 2:1-4)। उस समय उन्होंने यीशु का खुला प्रचार ''प्रभु भी और मसीह भी'' के रूप में करना था (प्रेरितों 2:36)।

''छतों पर से प्रचार करो'' यह कहने का प्रतीकात्मक ढंग है कि ''खुलेआम प्रचार करो।'' उस ज़माने में जब कोई दूरदराज के इलाके में संदेश को प्रसारित करना चाहता तो वह ऊंची पहाड़ी पर या छत पर चढ़ जाता और ज़ोर से पुकारता ताकि आसपास के सब लोगों को उसकी आवाज़ सुनाई दे सके। टालमुड में बताया गया है कि धार्मिक पवित्र दिनों के आरम्भ की घोषणा करने के लिए तुरहियां बजाने वाले किस प्रकार से अपने मेढ़ों के सींग बजाने के लिए छतों पर चढ़ जाते थे।[4]

**आयत 28.** यीशु के चेलों को अपने शत्रुओं से **न डरना** था, क्योंकि वे उसके चेलों की बहुत कम हानि कर सकते थे। वे उनके **शरीर को घात** कर सकते थे पर वे उनकी **आत्मा को घात नहीं कर सकते** थे। ''आत्मा'' के लिए यूनानी भाषा का शब्द (*psuchē*) इब्रानी भाषा के शब्द (*nepesh*) से मिलता-जुलता है और इसके कई अर्थ हैं, जैसे जीवन का श्वास, जीवन का नियम, सांसारिक जीवन, भीतरी मानवीय जीवन (जिसमें इच्छाएं और भावनाएं हैं), व्यक्ति और प्राण (जिससे यह सांसारिक जीवन मिलता है)।[5] इस संदर्भ में स्पष्टतया अन्तिम अर्थ ध्यान में है। शरीर को तो घात किया जा सकता है पर आत्मा जीवित रहती है (देखें 11:29; 16:26; मरकुस 8:36, 37; लूका 12:20; इब्रानियों 6:19; 1 पतरस 1:9, 22; 2:11; 4:19; याकूब 1:21; 5:20)। मसीह के वफ़ादार अनुयायियों को चाहे शरीर की हानि उठानी पड़े पर उन्हें ''अनन्त दण्ड'' या ''दूसरी मृत्यु'' का सामना नहीं करना पड़ना था (25:46; प्रकाशितवाक्य 20:14)। उनके शत्रु मनुष्य के उस भाग को जो अदृश्य और अभौतिक है, कोई हानि नहीं पहुंचा सकते।

मनुष्य से डरने के बजाय यीशु ने उन्हें बताया कि **उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर को नरक में नष्ट कर सकता है**। यहां दो प्रकार के ''भय'' में अन्तर किया गया है: मनुष्यों का भय स्वार्थमय है, परन्तु परमेश्वर का भय सही और अच्छा है।[6] परमेश्वर का भय माना जाना चाहिए, क्योंकि वह ''बचाने और नाश करने में सामर्थ'' है (याकूब 4:12)।

नाश करने के लिए यूनानी शब्द (*apollumi*) का अर्थ सर्वनाश नहीं है। आत्मा और शरीर को नष्ट होने के लिए लाया जाता है, जब उन्हें नरक में फैंका जाता है (''नरक'' के लिए, देखें 5:22 पर टिप्पणियां देखें)।

**आयतें 29-31.** यीशु के अनुयायियों को डरना नहीं चाहिए, क्योंकि परमेश्वर **पिता** ऊपर से देखता है और जो उसके हैं, उनकी रक्षा करता है। **गौरैये** बहुत कम कीमत के होते थे। पहली सदी में कई बार उन्हें खा लिया जाता था, परन्तु ये काम केवल निर्धन लोगों द्वारा किया जाता

था, क्योंकि ये इतने सस्ते होते थे कि **पैसे में दो** खरीदे जा सकते थे। लूका 12:6 में पांच गौरैये दो पैसे में बेचे जाते थे; ऐसा लगता है कि पांचवें को सौदे के रूप में फैंक दिया जाता था।[7] ''पैसे'' के लिए यूनानी शब्द (*assarion*) यीशु के समय में प्रचलन में तांबे के छोटे सिक्के को कहा गया है। यह दीनार के लगभग सोलहवें भाग की कीमत जितना होता है।[8] किसी काम के न होने के बावजूद इन पक्षियों में से एक भी बिना परमेश्वर की जानकारी से **भूमि पर नहीं गिर सकता** या मर सकता।

यहां पर यीशु ने बीच में कहा, ''**पर तुम्हारे सिर के बाल भी गिने गए हैं**।'' डेविड मैन्टन के अनुसार, अनुमान लगाया गया है कि एक व्यक्ति के सिर पर बालों की औसत संख्या 1,00,000 होती है।[9] हम हैरान हैं कि ऐसे अनुमान का पता कैसे चल सकता है! यीशु यह संकेत दे रहा था कि परमेश्वर हमारे जीवन की तुच्छ और बेकार बातों को भी जानता है। अन्य संदर्भों में, परमेश्वर की सुरक्षा इस प्रतिज्ञा में व्यक्त की गई है कि ''तुम्हारे सिर का एक बाल भी बांका न होगा'' (लूका 21:18; देखें प्रेरितों 27:34)।

यीशु मनुष्यों के लिए, विशेषकर उसके चेलों के लिए परमेश्वर की चिन्ता पर ज़ोर देने के लिए छोटे से बड़े तर्क का इस्तेमाल कर रहा था (6:26 पर टिप्पणियां देखें)। इस तर्क का समापन उसने यह कहते हुए किया, ''**इसलिए डरो नहीं। तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो**।'' परमेश्वर को मालूम होता है, जब उसके लोग दुख उठाते हैं (और मरते हैं) और उसे उनकी चिन्ता होती है। ऐसी ही एक बात जरूसलेम टालमुड में मिलती है: ''बिना स्वर्ग [अर्थात परमेश्वर] के एक पक्षी भी नष्ट नहीं होता; मानवीय जीव तो उससे कहीं बढ़कर हैं!''[10]

## ''जो कोई मुझे मान लेगा'' (10:32, 33)

**[32]''जो कोई मुनष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा। [33]पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इनकार करेगा, उसका मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इनकार करूंगा।''**

**आयत 32.** यीशु ने **मनुष्यों के सामने** [उसे] **मान** लेने वाले हर किसी के लिए बड़ी आशीष का वायदा करते हुए अपने अनुयायियों को निर्भय होने की प्रेरणा दी। ''मानना'' के लिए यूनानी शब्द (*homologeō*) का अर्थ घोषणा करना या मानना है। यहां यीशु के बारे में क्या मानना है, इसे स्पष्ट नहीं किया गया है। पहाड़ी उपदेश में यीशु ने उन कुछ लोगों की बात की, जिन्होंने उसे ''प्रभु'' मानना था; परन्तु उन्हें नकार दिया जाना था, क्योंकि उनके काम उनके विश्वास के अंगीकार से मेल नहीं खाते थे (7:21-23)। बाद में पतरस ने यह कहते हुए कि ''तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है'' (16:16) वह किया जिसे अच्छा अंगीकार कहा गया है।

चेलों को अन्यजाति हाकिमों और राजाओं के साथ-साथ यहूदी महासभाओं के सामने लाया जाना था (10:17, 18)। ऐसे सबके सामने मसीह को मानने के अवसर होने थे। चेलों को अपने अंगीकार को कायम रखने के लिए सताव के किसी भी भय पर काबू पाना था। यीशु ने स्वयं ''पुन्तियुस पिलातुस के सामने अच्छा इनकार किया'' (1 तीमुथियुस 6:13; देखें 27:11) और इसी कारण उसे क्रूस पर चढ़ाया गया।

यूहन्ना रचित सुसमाचार में बहुत से यहूदी लोग यीशु में अपने विश्वास की घोषणा करने से डरते थे, क्योंकि उनके अगुओं ने निर्णय ले लिया था कि ''यदि कोई कहे कि वह मसीह है, तो आराधनालयों में से निकाला जाए'' (यूहन्ना 9:22)। कुछ हाकिम भी यीशु में विश्वास रखते थे पर वे उसका अंगीकार नहीं करते थे ताकि ''ऐसा न हो कि आराधनालय में से निकाले जाएं'' (यूहन्ना 12:42)।

मसीही बनने से पूर्व मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार किया जाना आवश्यक है (रोमियों 10:9, 10; 1 तीमुथियुस 6:12)। वह अंगीकार यह है कि यीशु ''जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह'' है (16:16; देखें प्रेरितों 8:37)। इसका अर्थ उसे अपना प्रभु और स्वामी मान लेना है। मसीही व्यक्ति को विश्वास के अपने अंगीकार के कारण सताव सहना पड़ सकता है और अपना प्राण भी देना पड़ सकता है। तौभी ''परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में एक ही बिचवई'' (1 तीमुथियुस 2:5; NIV) अर्थात यीशु भी **उसे अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लेगा**। ''अपने स्वर्गीय पिता के सामने'' के बजाय लूका में ''परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने'' है (लूका 12:8, 9)।

**आयत 33.** इसके उलट कहते हुए यीशु ने उससे फिर जाने वाले किसी भी चेले को चेतावनी दी: ''**पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा, उसका मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करूंगा**।'' क्रिया शब्द ''इनकार'' (*arneomai*) का अर्थ ''अस्वीकार करना'' या ''नकारना।'' पहली नज़र में यह यीशु को अस्वीकार करना, प्रभु के रूप में नकारने के अर्थ में है। इस प्रकार से इसका इस्तेमाल पतरस के इनकारों के सम्बन्ध में की गई है (26:70, 72, 74)। दूसरी घटना में यह अपने चेले के रूप में यीशु द्वारा किसी का इनकार करना है (देखें 7:23; 2 तीमुथियुस 2:12)।

आरम्भिक मसीही लोग मसीह का इनकार करने के गहरे दबाव में होते थे। उदाहरण के लिए, दूसरी शताब्दी ईस्वी के आरम्भ में, पिन्तुस, बिथुनिया के हाकिम प्लाइनी छोटे ने सम्राट ट्राजन को मसीही लोगों के साथ व्यवहार करने की अपनी नीति के बारे में लिखा, जिन्होंने उसे नकारा था। उसने उन लोगों को जिन पर मसीही होने का आरोप था दो या तीन बार मसीह के इनकार का अवसर देते हुए प्रताड़ित किया तथा न मुकरने वालों को मार डाला। परन्तु यदि वे रोमी नागरिक होते तो वह उन्हें रोम में भेज देता। मसीही होने का इनकार करने वालों को मसीह को शाप देने, देवताओं से निवेदन करने और सम्राट की मूर्ति के सामने धूप और शराब के साथ प्रार्थना करने के बाद उन्हें छोड़ दिया जाता।[11]

## ''मैं मिलाप कराने नहीं आया'' (10:34-36)

**[34]''यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को आया हूं; मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलाने आया हूं। [35]मैं तो आया हूं कि मनुष्य को उसके पिता से, और बेटी को उसकी मां से, और बहू को उसकी सास से अलग कर दूं। [36]मनुष्य के बैरी उसके घर ही के लोग होंगे।''**

**आयत 34.** यहां सुलह के सम्बन्ध में कही गई यीशु की बात संसार में उसके आने के

उद्देश्य का विरोधाभास लगती है। यशायाह ने उसे ''शान्ति का राजकुमार'' कहा और शान्ति और न्याय के उसके राज की बात की (यशायाह 9:6, 7)। हम उसके दावे की व्याख्या कैसे करें? हमें ध्यान देना होगा कि **मिलाप** का न होना कठोर मनों के कारण है। जो कुछ यीशु ने कहा और किया उससे लोगों में फूट पड़ गई; यह फूट उनके उसे ग्रहण करने के द्वारा पड़ी थी। यीशु को नकारने वालों ने स्पष्टतया उसे ग्रहण करने वालों के साथ मिलकर नहीं रहना था। **तलवार** की बात ''झगड़ा'' या ''फूट'' के लिए रूपक का काम करती है (लूका 12:51)। यीशु शान्ति का राजकुमार है (लूका 2:14; इफिसियों 2:14-18), परन्तु उसकी शान्ति संसार वाली शान्ति नहीं है (यूहन्ना 14:27; गलातियों 5:22)।

**आयतें 35, 36.** इन आयतों में यीशु ने मीका 7:6 में से उद्धृत किया। उसका इरादा चाहे फूट डालने का नहीं, बल्कि लोगों को इकट्ठा करने का ही था, पर सुसमाचार के सुनाने से आमतौर पर लोगों में फूट ही पड़ती है। उसका संदेश लोगों के परिवारों तक को अलग कर देता है, क्योंकि परिवार के कुछ सदस्य हो सकता है जो उसके संदेश को ग्रहण करें, जबकि अन्य इसे नकार दें। यीशु के अपने परिवार में यही हुआ (मरकुस 3:20, 21, 31-35; यूहन्ना 7:1-9)। सबसे निकट सम्बन्ध टूट सकते हैं जब एक उसकी शिक्षा के प्रति वफ़ादार हो और दूसरा नहीं। **पिता** और **मां** अपने बच्चों के विरुद्ध हो सकते हैं, या बच्चे अपने माता-पिता को उनके विश्वास के साथ ठुकरा सकते हैं। पति और पत्नियां भी इस आत्मिक झगड़े में आमने-सामने हो सकते हैं। ऐसे मतभेद होने पर, **घर ही के लोग** आम तौर पर **बैरी** बन जाते हैं (10:21 पर टिप्पणियां देखें)।

## ''और सब से बढ़कर मुझ से प्रेम रखो'' (10:37-39)

**[37]''जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं; और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है वह मेरे योग्य नहीं। [38]और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं। [39]जो अपने प्राण बचाता है, वह उसे खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा।''**

**आयत 37.** यीशु ने अपने अनुयायियों को उसे अपने परिवार के लोगों से बढ़कर प्रेम रखने की चुनौती दी। लूका 14:26 में उसने कहा कि उसका चेला बनने के लिए ''अपने पिता और माता, पत्नी और बच्चों और भाई और बहनों को अप्रिय'' जानना आवश्यक है। उसका चेला बनने का अर्थ है कि मनुष्य मानवीय स्तर पर अपने सबसे प्रियजनों अर्थात अपने परिवार को भी अपने और अपने प्रभु के बीच में आने नहीं दे सकता। मत्ती 10:37 में लूका 14:26 के अर्थ को समझाया गया है। ''अप्रिय'' जानने की यीशु की आज्ञा का अर्थ स्पष्टतया ''कम प्रिय'' जानना है (देखें उत्पत्ति 29:31; KJV)। मसीह अपने चेलों से किसी से भी घृणा नहीं करवाना चाहता, पर दूसरों के प्रति उनका लगाव उसके प्रति उनके समर्पण के बाद होना आवश्यक है। नहीं तो वे उसके चेले कहलाने के योग्य नहीं हैं।

**आयत 38.** यीशु ने प्रेरितों को यह कहते हुए चुनौती दी, **''और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं।''** सुसमाचार के विवरणों में क्रूस का यह पहला उल्लेख

है (देखें 16:24; मरकुस 8:34; लूका 9:23)। यह रूपक दोषी अपराधी को क्रूस पर चढ़ाए जाने के स्थान पर क्रूस का अपना शहतीर ले जाने के लिए विवश करने की रोमी प्रथा से लिया गया।[12] क्रूस कष्ट, अपमान और अन्त में मृत्यु का प्रतीक था। यहां यह उस बोझ को दर्शाता है, जो यीशु के चेलों के लिए उठाना आवश्यक है, जिसमें प्रभु के वफ़ादार बनने के लिए आने वाला कोई भी बलिदान करना आवश्यक है। क्रूस को उठाने के लिए अपना स्वयं का प्राण देना भी आवश्यक हो सकता है। किसी के क्रूस को उठाने के विचार के लिए लूका ने ''प्रतिदिन'' शब्द जोड़ दिया, जो निरन्तर प्रक्रिया का संकेत है (लूका 9:23)। अपने क्रूस को न उठा पाना व्यक्ति को उसका चेला होने के अयोग्य बना देता है, जिसने गुलगुता के मार्ग पर अपना क्रूस उठाया था (यूहन्ना 19:17)।

**आयत 39.** यीशु ने आगे कहा, **''जो अपने प्राण बचाता है, वह उसे खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा''** (देखें 16:25; मरकुस 8:35; लूका 9:24; 17:33; यूहन्ना 12:25)। अपने प्राण को बचाना अपने आपको सम्भालना और अपने आप में सन्तुष्ट होना है। यदि कोई अपने लिए जीता है तो वह अनन्तकाल के लिए परमेश्वर से अलग हो जाएगा, यानी वह अपने प्राण को खो देगा। इसके विपरीत जो अपनी इच्छाओं के लिए मर जाता है, यहां तक कि शहादत में अपनी जान दे देता है, वह परमेश्वर के साथ सदा तक जीवित रहेगा। स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए किसी भी प्रकार का बलिदान देने की इच्छा वह स्थिति है, जिसकी इच्छा की जानी चाहिए। जो लोग किसी भी कीमत पर यीशु के वफ़ादार रहते हैं, जो अन्त तक सह लेते हैं, वे ही अनन्त जीवन की महिमा पाएंगे।[13] जेम्स बर्टन कॉफ़मैन ने इस विचार को यह कहते हुए संक्षिप्त किया:

> जो व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा की तलाश में बिना शर्त के अपना प्राण दे देता है ... इस आयत के अर्थ में अपना प्राण खोता है। अपने प्राण और इच्छा को मसीह के लोगों की इच्छा से मिलाना, ताकि वह पौलुस के साथ कह सके, ''अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है'' (गलातियों 2:20), अपने प्राण को खोना और इसे बचाना भी है।[14]

## ''जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है'' (10:40-42)

40**''जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजने वाले को ग्रहण करता है।** 41**जो भविष्यवक्ता को भविष्यवक्ता जानकर ग्रहण करे, वह भविष्यवक्ता का बदला पाएगा; और जो धर्मी को धर्मी जानकर ग्रहण करे, वह धर्मी का बदला पाएगा।** 42**जो कोई इन छोटों में से एक को चेला जानकर केवल एक कटोरा ठण्डा पानी पिलाए, मैं तुमसे सच कहता हूं, वह किसी रीति से अपना प्रतिफल न खोएगा।''**

**आयत 40.** यीशु ने प्रेरितों को बताया, **''जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है।''** ''ग्रहण करता'' का अर्थ 10:9-15 में स्पष्ट किया गया है। जो लोग प्रेरितों को अपने घरों में ग्रहण करते और उन्हें भोजन और रहने के लिए देते थे, उन्हें यीशु के कहने के अनुसार ''ग्रहण

करता'' था। प्रेरितों की तरह ही आज मसीही लोग उसके नाम और उसके अधिकार से संसार में जाते हैं (28:18-20)। सुमसाचार का संदेश देने वाले को जो भी ''स्वीकार करता'' है वह एक अर्थ में यीशु को ही स्वीकार कर रहा होता है (गलातियों 4:14)। इसी प्रकार जो लोग यीशु के चेलों को सताते हैं, वह उसे ही सता रहे हैं (प्रेरितों 9:1-4)। रब्बियों की एक परम्परा में कहा गया है, ''व्यक्ति का प्रतिनिधि वह व्यक्ति स्वयं होता है।''[15]

यीशु ने उन्हें याद दिलाया, ''**जो मुझे ग्रहण करता है वह मेरे भेजने वाले को ग्रहण करता है**।'' मसीह के कार्य में सहायता देकर व्यक्ति पिता का आदर करता है जिसे उसने भेजा (मरकुस 9:37; लूका 9:48; यूहन्ना 13:20)।

**आयत 41.** यीशु ने अपनी घोषणा में भविष्यवक्ताओं को भी शामिल किया, ''**जो भविष्यवक्ता को भविष्यवक्ता जानकर ग्रहण करे, वह भविष्यवक्ता का बदला पाएगा**।'' ''भविष्यवक्ता जानकर'' वाक्यांश ''इब्रानी ढंग है, जिसका अर्थ है 'भविष्यवक्ता के रूप में।' ''[16] विलियम हैंड्रिक्सन ने आयत 41क का अनुवाद इस प्रकार किया है, ''जो कोई भविष्यवक्ता को ग्रहण करता है, *क्योंकि वह* भविष्यवक्ता है।''[17] यह विचार इस प्रकार लगता है कि जो कोई परमेश्वर के भेजे हुए को केवल इसलिए ग्रहण करता है कि वह जो है, और इनाम पाने की इच्छा से नहीं, तो वह वैसा ही इनाम पाएगा जैसे वह स्वयं भविष्यवक्ता हो। आरम्भिक कलीसिया में भविष्यवक्ता और भविष्यवक्तिनें होती थीं (प्रेरितों 11:27-30; 13:1; 21:9-11; 1 कुरिन्थियों 12:28; इफिसियों 2:20; 3:5)। भविष्यवाणी आश्चर्यकर्म का एक दान था जो आरम्भिक मसीहियत में समाप्त हो गया (देखें 1 कुरिन्थियों 13:8)।

आयत 41ख संकेत देती है कि **धर्मी** (*dikaios*) के प्रति दिखाया गया आतिथ्य सरकार भी ऐसी ही आशीष दिलाएगा। *Dikaios* शब्द का अर्थ उसके लिए है, जो धर्मी और अच्छा है, अर्थात जिसका जीवन परमेश्वर के नियमों से मेल खाता है। मत्ती में ''भविष्यवक्ताओं'' और ''धर्मियों'' को और भी कहीं इकट्ठे रखा गया है (13:17; 23:29)। इन शब्दों का इस्तेमाल पर्यायवाची समानार्थी शब्दों में एक-दूसरे के स्थान पर किया जा सकता है। एक और सम्भावना है कि भविष्यवक्ता धर्मी से अलग हैं क्योंकि धर्मियों को परमेश्वर की प्रेरणा नहीं होती। यह भी सम्भव है कि इस आयत में ''धर्मी'' आरम्भिक कलीसिया के ''उपदेशक'' को कहा गया है (देखें 1 कुरिन्थियों 12:29; इफिसियों 4:11; याकूब 3:1)।

**आयत 42. इन छोटे** वाक्यांश का अर्थ प्रेरितों के लिए हो सकता है (देखें मरकुस 9:41) या यह सामान्य अर्थ में यीशु के अनुयायियों की ओर संकेत हो सकता है (देखें 18:6, 10, 14; मरकुस 9:42; लूका 17:2)। यह विवरण लाड़-प्यार का शब्द हो सकता है। यूहन्ना ने उन सब मसीही लोगों की बात करने के लिए जिन्हें वह लिख रहा था ऐसी ही अभिव्यक्ति ''हे बालको'' का इस्तेमाल किया (1 यूहन्ना 2:1, 28; 3:7, 18)। दूसरी ओर यह वह विवरण हो सकता है जो उन लोगों पर ज़ोर देता है जो सांसारिक मानदण्डों के अनुसार लाचार और महत्वहीन हैं-''मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों'' (25:40; NIV)।

**एक कटोरा ठण्डा पानी** देने जैसी की गई छोटी से छोटी सेवा, को भी ध्यान में रखा जाएगा (25:31-46)। हो सकता है कि कोई अपने विश्वासी साथी को भोजन न दे पाए या उसे रहने का स्थान न दे सके; पर यदि वह थोड़ी सी भी दयालुता करता है तो वह **अपना प्रतिफल**

**न खोएगा।**

यीशु द्वारा अपने प्रेरितों को लिमिटेड कमीशन यानी सीमित आज्ञा दे चुकने के बाद, जो कुछ उसने उन्हें करने को दिया था, वे उसे करने के लिए निकल गए (मरकुस 6:12, 13; लूका 9:6)। बाद में उन्होंने यीशु के पास लौटकर अपने मिशन की सफलता के बारे में बताया (मरकुस 6:30; लूका 9:10)।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

## प्रेरित की मृत्यु (10:28)

यीशु ने अपने प्रेरितों से कहा था ''जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना'' (10:28)। इन लोगों ने उसके वचनों को दिल से लगा लिया; परम्परागत स्रोतों का दावा है कि यूहन्ना को छोड़ जो बुढ़ापे में मरा, सभी प्रेरितों ने शहादत में अपने प्राण दे दिए।[18] यह स्रोत कई बार मृत्यु के स्थान और ढंग पर असहमत होते हैं, परन्तु वे प्रेरितों की निडरता और समर्पण का प्रभाव देते हैं। इन लोगों के लिए मसीह की गवाही देने के कारण पथराव किए जाने, सिर कलम कर दिए जाने और क्रूस पर चढ़ाए जाने की बातें बताई जाती हैं। ये विवरण स्तिफनुस पर पथराव और तलवार से याकूब की मृत्यु से मेल खाते हैं, जो नये नियम में दर्ज हैं (प्रेरितों 7:58; 12:2)।

डेविड स्टिवर्ट

## अच्छा अंगीकार (10:32)

मसीही व्यक्ति के लिए अपने बपतिस्मे के समय किए गए अच्छे अंगीकार को बनाए रखना आवश्यक है। ऐसा वह प्रतिदिन अपने जीने के ढंग और यीशु में अपने विश्वास को दूसरों को बताकर करता है। पौलुस ने तीमुथियुस से आग्रह किया कि ''विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़; और उस अनन्त जीवन को धर ले, जिस के लिए तू बुलाया गया, और बहुत गवाहों के साम्मने अच्छा अंगीकार किया था'' (1 तीमुथियुस 6:12; NIV)।

डेविड स्टिवर्ट

## अपने प्राण को बचाना (10:39)

कई बार हम किसी जवान के लिए कहते हैं कि वह ''अपने आपको ढूंढ़ने'' की कोशिश कर रहा है। कई लोग खेलकूद, शौक, शिक्षा और कैरियर जैसी सही गतिविधियों के द्वारा अपने आपको ढूंढ़ने की कोशिश करते हैं। दूसरे लोग नशों या नाजायज शारीरिक सम्बन्धों जैसे अनुभव से अवैध खोज के द्वारा अपने आपको ढूंढ़ने का प्रयास करते हैं। अन्त में इनमें से कोई भी अपने आपको सन्तुष्ट नहीं कर सकता। सुलैमान ने अपने प्राण को बचाने के लिए काम, सम्पत्ति और स्त्रियों का पीछा किया और अन्त में उसके हाथ कुछ नहीं लगा। उसने निष्कर्ष निकाला कि जीवन का अर्थ केवल परमेश्वर के साथ सम्बन्ध में मिलता है (सभोपदेशक 12:13, 14)। आज लोग मसीह के पीछे चलकर प्राण को ढूंढ़ सकते हैं। यह मार्ग अपने आपका इनकार करना और

बलिदान का है और केवल इसी में सच्ची सन्तुष्टि है।

डेविड स्टिवर्ट

---

टिप्पणियां

[1]टालमुड *बेराक्रोथ,* 58बी. [2]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इंटरप्रेटेशन (लुईसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 115. [3]*द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशो. संस्क., संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1979), 1:447-48 एंड थियोडोर जे. लुईस, ''बीलजबूल''; द *एंकर बाइबल डिक्शनरी,* संपा. डेविड नोयल फ्रीडमैन (न्यू यार्क: डबल्डे, 1992), 1:638-70 में देखें। [4]टालमुड *शब्बथ* 35बी. [5]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 1098-1100. [6]आर. टी. फ्रांस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 186. [7]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 97. [8]बाउर, 145. दीनार एक मज़दूर की एक दिन की मज़दूरी होती थी (20:13)। [9]डेविड मेंटन, ''द अमेज़िंग ह्यूमन हेयर,'' *ऑन्सर्स* (जुलाई/सितम्बर 2007): 77. [10]जरूसलेम टालमुड *शेबिथ* 9.1. ''बिना स्वर्ग'' का अर्थ या तो परमेश्वर के ज्ञान या उसकी शक्ति के बिना हो सकता है।

[11]प्लाइनी *लैटर्स* 10.96. [12]पलुटार्क *मोरलिया* 554बी. [13]डेविड हिल, द *गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 195. [14]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंटी ऑन मैथ्यू* (आस्टिन, टैक्सस: फ़र्म. फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1977), 146. [15]मिशनाह *बेराक्रोथ* 5.5. [16]जैक पी. लुईस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 1, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 157; देखें NEB. [17]विलियम हैंड्रिक्सन, *न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री: एक्सपोज़िशन आफ़ द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1973), 478; देखें NIV. [18]देखें विलियम बायर्न फोरबुस, संपा., *फॉक्स 'स बुक्स ऑफ मार्टिर्स* (फिलाडेल्फिया: यूनिवर्सल बुक एंड बाइबल हाउस, 1926), 2-5.